BSEB class 9th hindi notes Chapter 4 लालपान की बेगम

लेखक – परिचय

-फणीश्वरनाथ रेणु

लालपान की बेगम

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म औराही हिंगना नामक गाँव , जिला अररिया (बिहार) में 4 मार्च 1921 ई . को हुआ था । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गढ़वनैली , सिमरधनी , अररिया और फारबिसगंज में तथा माध्यिमक शिक्षा विराटनगर (नेपाल) के विराटनगर आदर्श उच्च विद्यालय में हुई । रेणु ने 1942 ई . के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख सेनानी की भूमिका निभाई । 1950 ई . में नेपाली जनता को राजशाही के दमन और अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए वहाँ सशस्त्र क्रांति और राजनीति में उन्होंने सक्रिय योगदान दिया । वे दमन और शोषण के विरुद्ध आजीवन संघर्षरत रहे । सत्ता के दमनचक्र के विरोध में उन्होंने पद्मश्री की उपाधि का त्याग कर दिया था । 11 अप्रैल , 1977 ई . को उनका देहावसान हो गया ।

हिंदी कथा साहित्य में जिन कथाकारों ने युगांतर उपस्थित किया है , फणीश्वरनाथ रेणु उनमें से एक हैं । उन्होंने कथा साहित्य के अतिरिक्त संस्मरण , रेखाचित्र , रिपोर्ताज आदि विधाओं को | नई ऊंचाई दी । उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं – ' मैला आँचल ' , ' परती परिकथा ' , ' दीर्घतपा ' , ' कलंक मुक्ति ' , ' जुलूस ' , ' पल्टू बाबू रोड ' (उपन्यास) , ' ठुमरी ' , ' अगिनखोर ' , ' आदिम रात्रि की महक ' , " एक श्रावणी दोपहरी की धूप ' , ' अच्छे आदमी ' , (कहानी संग्रह) , ' ऋणजल – धनजल ' , ' वन तुलसी की गंध ' ' श्रुत – अश्रुत – पूर्व ' (संस्मरण) ; ' नेपाली क्रांतिकथा ' (रिपोर्ताज) आदि ।

कहानी का सारांश

' लालपान की बेगम ' फणीश्वरनाथ रेणु रचित ग्रामीण परिवंश से जुड़ी एक चर्चित कहानी है । इस कहानी में रेणुजी ने ग्रामीण जीवन के सुख – दुख के चित्र को बड़ी खूबी के साथ अंकित किया है । कहानी की नायिका – बिरजू की माँ । कहानी के प्रारंभ में उसे एक झगड़ालू तथा क्रोधि त मनःस्थितिवाली महिला के रूप में दिखाया गया है । उसके पति ने उससे पहले ही कहा था कि आज शाम को उसे परिवार के साथ बैलगाड़ी पर बैठाकर बलरामपुर का नाच दिखाने ले जाएगा । उस दिन मीठी रोटी बनेगी । परिवार के सभी लोग बढ़िया – बढ़िया कपड़ा पहनकर नाच देखने चलेंगे । भोली – भाली बिरजू माँ काफी उल्लासित मन : स्थिति में आज के इस नाच देखने की तिथि और समय की प्रतीक्षा में थी । अब वही दिन और समय आ गया है । सरल हृदया बिरजू की माँ शकरकंद उबालकर मीठी रोटी बनाने की तैयारी कर रही है । समय निकलता जा रहा है । बिरजू के बाप के पास बैल तो है पर गाड़ी नहीं । वह गाड़ी मांगने के लिए पास के गाँव आया है । उसके लौटने में अनावश्यक विलम्ब हो रहा है । बिरजू की माँ अब सब्र खो रही है । उसकी प्रतीक्षा की मनः स्थिति अब क्रोध और खीझ में बदल रही है । वह सहुआइन के यहाँ से गुड़ लेने गई और वहाँ से लौटी अपनी बेटी पिया पर यूँ ही बिगड़ने लगती है । मखनी फुआ की पुकार भरी आवाज पर झल्लाकर उसे भला – बुरा कह बैठती है । इस गुस्से की मन : स्थिति में वह बेटे बिरजू और वहीं बँधी अपने बाँगड़ को भला – बुरा कह बैठती है । बिरजू की माँ तुनुकमिजाज है । वह गुस्से को उस मन : स्थिति में अपने दोनों बच्चों को डाँट – फटकारकर भूखे सोने की क्रोध – भरी आज्ञा देती है । वह अपने पति को भी कोसने लगती है- " उसका भाग हीखराब है जो एसा गोबर गणेश धरवाला उसे मिला , उसे कौन – सा सुख – मौज दिया है , उसके मई ने । कोल्हू के बैल की तरह खटकर सारी उम्र बिता दी । इसके यहाँ कभी एक पैसे की जलेबी भी लाकर दी है उसके खसम ने ? उसे रह – रहकर अपने ऊपर भी गुस्सा आता है- " वह भी कम नहीं । उसकी जीभ में आग लगे । "

कुछ ही देर में बिरजू का बाप बैलगाड़ी लेकर आता है । बच्चे अपनी माँ के साथ तो प्रतीक्षा में थे ही । बिरजू का बाप अपनी पत्नी से इस विलंब का कारण बताता है और उसे नाच में चलने के लिए तैयार कर लेता है । बिरजू की

https://www.evidyarthi.in/

माँ सरल हृदय महिला है । उसका क्रोध तुरंत काफूर हो जाता है । बिरजू का बाप उसके उस रूप को एकटक देखता रहता है । मानो वह लालपान को बेगम हो । चलने के क्रम में बिरजू की माँ गाँव की कुछ बहुओं को भी जो उससे डाह करती है – बैलगाड़ी पर बैठा ले जाती है । उसके मन में किसी तरह का किसी के लिए कोई मैल नहीं रह जाता । उसके मन में कोई लालसा अब नहीं ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/